बालकनी को बदला खूबसूरत ग्रीन कॉर्नर में

गीता परिहार ने सजाया सुकून का खूबसूरत आशियाना

नवभारत न्यूज

आज के दौर में होम गार्डनिंग केवल शौक नहीं, बल्कि स्वस्थ और सकारात्मक जीवनशैली का हिस्सा बन चुकी है. शहरों में सीमित जगह होने के बावजूद लोग अपनी बालकनी और टैरेस को हरियाली से सजा रहे हैं। ऐसी ही एक प्रेरणादायक मिसाल पेश की है गीता परिहार ने, जिन्होंने अपनी बालकनी को खूबसूरत ग्रीन कॉर्नर में बदल दिया है.

बालकनी में प्रवेश करते ही चारों ओर फैली हरियाली मन को सुकून देती है। हैंगिंग प्लांट्स, इनडोर और आउटडोर पौधों के साथ रंग-बिरंगे फूल पूरे वातावरण को प्राकृतिक सुंदरता से भर देते हैं. अलग-अलग आकार के गमलों और आकर्षक प्लांट स्टैंड्स की मदद से हर पौधे को व्यवस्थित ढंग से सजाया गया है, जिससे पूरी बालकनी किसी छोटे-से बॉटनिकल गार्डन का अहसास कराती है.

गीता परिहार ने अपनी बालकनी में अरेका पाम, स्नेक प्लांट, मनी प्लांट, सिंगोनियम, मॉन्स्टेरा, फर्न, स्पाइडर प्लांट, क्रोटन, ड्रेसीना, रबर प्लांट सहित कई सजावटी पौधे लगाए हैं. वहीं विभिन्न प्रकार के फूलों वाले पौधे इस गार्डन की खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं। दीवारों पर लगी वर्टिकल गार्डनिंग, हैंगिंग बास्केट और हरियाली के बीच रखा रतन (केन) का फर्नीचर इस स्थान को आराम और प्रकृति का बेहतरीन संगम बनाता है। बालकनी में खूबसूरत रतन (केन) के सोफा सेट और सेंटर टेबल भी लगाए गए हैं,

जो इस ग्रीन स्पेस की खूबसूरती को और बढ़ा देते हैं. सुबह की ताज़ी हवा, पक्षियों की चहचहाहट और चारों ओर फैली हरियाली के बीच यहां बैठकर एक कप चाय या कॉफी का आनंद लेना किसी प्राकृतिक गार्डन में समय बिताने जैसा अनुभव देता है. यह स्थान परिवार और मेहमानों के साथ सुकून के कुछ पल बिताने के लिए भी एक बेहतरीन बैठने की जगह बन गया है.

गीता परिहार का कहना है मेरे लिए यह बालकनी सिर्फ घर का एक हिस्सा नहीं, बल्कि सुकून और प्रकृति से जुड़ने की सबसे खूबसूरत जगह है. सुबह की चाय हरियाली के बीच पीने का आनंद ही अलग होता है. पौधों के बीच बिताया गया हर पल मन को शांति देता है और पूरे दिन के लिए नई ऊर्जा से भर देता है. मेरा मानना है कि अगर थोड़ी-सी जगह और पौधों के प्रति लगाव हो, तो कोई भी अपनी बालकनी को खूबसूरत ग्रीन कॉर्नर में बदल सकता है.

उनकी यह खूबसूरत बालकनी उन लोगों के लिए प्रेरणा है जो कम जगह में भी प्रकृति के करीब रहना चाहते हैं. थोड़ी-सी मेहनत, सही योजना और पौधों की नियमित देखभाल से किसी भी साधारण बालकनी को हरियाली से भरपूर आकर्षक गार्डन में बदला जा सकता है. यह ग्रीन स्पेस न केवल घर की सुंदरता बढ़ाता है, बल्कि मानसिक सुकून और सकारात्मक ऊर्जा का भी एहसास कराता है.

संस्कार, सुरक्षा, सामाजिक सौहार्द में भी देश के लिए प्रेरणा बने इंदौर

'ज़रूरी है कि कहीं शहर की पहचान पर खतरा न बन जाए, इसलिए अब समाधान की ओर कदम बढ़ाना होगा।'

नवभारत
कैसा हो सपनों का इंदौर

हमारा शहर केवल अपनी इमारतों, चौड़ी सड़कों या आधुनिक विकास के कारण नहीं जाना जाता, बल्कि अपनी संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक मूल्यों और अनुशासन के कारण देशभर में सम्मान प्राप्त करता है. स्वच्छता के क्षेत्र में लगातार देश में नंबर-1 बनकर हमने यह साबित किया है कि जब प्रशासन और नागरिक एक साथ संकल्प लेते हैं, तो असंभव भी संभव हो जाता है. आज हमारा शहर पूरे देश के लिए एक आदर्श है.

लेकिन बदलते समय के साथ कुछ ऐसी चुनौतियाँ भी सामने आ रही हैं जिन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता. युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति, अनुशासनहीनता, हिंसक व्यवहार और सामाजिक जिम्मेदारियों से दूरी चिंता का विषय है. यह केवल कानून-व्यवस्था का प्रश्न नहीं, बल्कि समाज के भविष्य का प्रश्न है. हर शहर में लोग शिक्षा, रोजगार और बेहतर अवसरों की तलाश में आते हैं. यह विकास का स्वाभाविक हिस्सा है. लेकिन शहर की पहचान और संस्कृति को बनाए रखना हम सभी की साझा जिम्मेदारी है. जो भी इस शहर में रहे, वह यहाँ के कानून, सामाजिक मूल्यों और आपसी सम्मान की भावना को अपनाए. किसी व्यक्ति का आकलन उसके क्षेत्र या पृष्ठभूमि से नहीं, बल्कि उसके व्यवहार और जिम्मेदारी से होना चाहिए. आज आवश्यकता केवल नशे के खिलाफ अभियान चलाने की नहीं, बल्कि युवाओं को सही दिशा देने की है. परिवारों को अपने बच्चों के साथ संवाद बढ़ाना होगा, विद्यालयों और महाविद्यालयों को संस्कार और सामाजिक जिम्मेदारी पर विशेष ध्यान देना होगा, समाज को जागरूक रहना होगा और प्रशासन को ऐसे तत्वों पर सख्ती से कार्रवाई करनी होगी जो युवाओं को गलत राह पर ले जाते हैं. जैसे हमने स्वच्छता को जनआंदोलन बनाकर पूरे देश के सामने एक मिसाल कायम की, उसी तरह अब समय आ गया है कि 'संस्कारित, सुरक्षित और नशामुक्त शहर' का अभियान भी जनभागीदारी से आगे बढ़ाया जाए. हमारा लक्ष्य केवल साफ़ शहर नहीं, बल्कि ऐसा शहर होना चाहिए जहाँ युवा अपने सपनों को नशे से नहीं, मेहनत और अच्छे संस्कारों से पूरा करें. आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें कि अहिल्या नगरी केवल स्वच्छता में ही नहीं, बल्कि संस्कार, सुरक्षा, सामाजिक सौहार्द और जागरूक नागरिकता में भी पूरे देश के लिए प्रेरणा बने. यही हमारे शहर की असली पहचान होगी और यही आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारी सबसे बड़ी विरासत होगी.

भारती मंडोले
फाउंडर × डायरेक्टर, ईवा वेलफेयर ऑर्गेनाइजेशन

कासलीवाल ट्रॉफी फुटबॉल में रिकॉर्ड भागीदारी

नवभारत न्यूज

इंदौर. शहर की प्रतिष्ठित अंतर-विद्यालय कासलीवाल ट्रॉफी फुटबॉल प्रतियोगिता इस वर्ष नया इतिहास रचने जा रही है. प्रतियोगिता के 40वें बालक और पांचवें बालिका संस्करण में रिकॉर्ड 62 विद्यालयों ने भागीदारी की पुष्टि की है. इनमें बालक वर्ग के 40 और बालिका वर्ग के 22 विद्यालय शामिल हैं. यह प्रतियोगिता के चार दशक के इतिहास में अब तक की सबसे बड़ी सहभागिता मानी जा रही है.

आयोजकों के अनुसार इस वर्ष प्रतियोगिता का दायरा पहले की तुलना में काफी बढ़ा है. बालक वर्ग में 11 नए विद्यालय और बालिका वर्ग में 6 नए विद्यालय पहली बार हिस्सा ले रहे हैं. इससे स्पष्ट है कि कासलीवाल ट्रॉफी की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है और यह प्रतियोगिता राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अलग पहचान स्थापित कर चुकी है. करीब 40 वर्षों से आयोजित हो रही यह प्रतियोगिता स्कूली फुटबॉल

पहली बार 62 स्कूलों की टीमें उतरेंगी मैदान में

खिलाड़ियों के लिए महत्वपूर्ण मंच रही है. यहां से कई प्रतिभाओं ने राज्य और राष्ट्रीय स्तर तक अपनी पहचान बनाई है. यही कारण है कि हर वर्ष देश के विभिन्न हिस्सों के विद्यालय इसमें भाग लेने के लिए उत्सुक रहते हैं. इस बार रिकॉर्ड संख्या में टीमों की भागीदारी से मुकाबले और अधिक प्रतिस्पर्धात्मक होने की उम्मीद है. प्रतियोगिता का आयोजन 8 से 16 अगस्ततक किया जाएगा. नौ दिनों तक चलने वाले इस आयोजन में लीग और नॉकआउट मुकाबलों के जरिए दोनों वर्गों के चैंपियन का फैसला होगा. प्रतियोगिता का भव्य उद्घाटन 8 अगस्त को होगा, जिसके साथ लगातार नौ दिनों तक रोमांचक मुकाबलों का सिलसिला शुरू होगा.

आयोजकों का कहना है कि कासलीवाल ट्रॉफी का उद्देश्य स्कूली स्तर पर फुटबॉल प्रतिभाओं को बेहतर प्रतिस्पर्धी मंच उपलब्ध कराना और खेल संस्कृति को बढ़ावा देना है. रिकॉर्ड भागीदारी इस बात का प्रमाण है कि यह प्रतियोगिता अब देश की सबसे प्रतिष्ठित और बहुप्रतीक्षित अंतर-विद्यालय फुटबॉल स्पर्धाओं में शामिल हो चुकी है. इस वर्ष भी खिलाड़ियों के बीच कड़े मुकाबलों के साथ नए प्रतिभाशाली फुटबॉलरों के उभरने की उम्मीद जताई जा रही है.

हरियाली से लखदख

बारिश के बाद खंडवा रोड स्थित आईटी पार्क और यूनिवर्सिटी के आसपास का इलाका हरियाली से लहलहा उठा है . घने पेड़ों के बीच उभरती इमारतें, बादलों से घिरा आसमान और ताजा वातावरण शहर की प्राकृतिक सुंदरता को आकर्षक बना रहे हैं . छाया : कैलाश मित्तल

सदाबहार गीतों से सजी संगीतमय संध्या

नवभारत न्यूज

इंदौर. सोनी म्यूजिकल ग्रुप, इंदौर द्वारा महानायक एवं स्वर सम्राट स्वर्गीय किशोर कुमार की जयंती के अवसर पर प्रीतम लाल दुआ सभागृह, रीगल चौराहा पर संगीतमय कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में इंदौर सहित बाहर से आए कलाकारों ने किशोर कुमार के सदाबहार गीतों की शानदार प्रस्तुतियां देकर उपस्थित संगीत प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर दिया.

कार्यक्रम में राजेंद्र सिंह सिसोदिया, नेहा ठाकुर एवं श्रीमती शकुंतला ने अपनी मधुर प्रस्तुतियों से श्रोताओं की खूब सराहना बटोरी. कार्यक्रम के दौरान किशोर कुमार के लोकप्रिय गीतों की प्रस्तुति पर दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट से कलाकारों का उत्साहवर्धन किया.

श्रोताओं ने लिया भरपूर आनंद

कार्यक्रम के आयोजक विजय सोनी ने सभी कलाकारों, अतिथियों एवं संगीत प्रेमियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे आयोजन महान कलाकारों की स्मृतियों को जीवंत बनाए रखने के साथ नई पीढ़ी को भी उनके संगीत से जोड़ने का कार्य करते हैं।

इंदौर की प्राकृतिक एवं आध्यात्मिक धरोहर है जानापाव

बारिश का मौसम आते ही प्रकृति मानो नए रंगों से सज उठती है. हरी-भरी वादियां, बादलों से ढकी पहाड़ियां, झरनों की कल-कल और ठंडी हवाएं हर किसी को शहर की भागदौड़ से दूर सुकून के कुछ पल बिताने के लिए आकर्षित करती हैं. यदि आप इंदौर में रहते हैं और मानसून के दौरान किसी खूबसूरत प्राकृतिक स्थल पर ट्रेकिंग या छोटी यात्रा की योजना बना रहे हैं, तो जानापाव आपके लिए एक बेहतरीन विकल्प हो सकता है.

नवभारत न्यूज

इंदौर से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित जानापाव धार्मिक, ऐतिहासिक और प्राकृतिक महत्व का अद्भुत संगम है. विंध्यांचल पर्वत श्रृंखला की सबसे ऊंची चोटियों में शामिल यह स्थान भगवान परशुराम की जन्मस्थली के रूप में प्रसिद्ध है. मान्यता है कि यहीं महर्षि जमदग्नि का आश्रम था, जहां भगवान परशुराम का जन्म हुआ था. इसी कारण यह स्थान श्रद्धालुओं के साथ-साथ प्रकृति प्रेमियों और ट्रेकिंग के शौकीनों के लिए भी विशेष आकर्षण का केंद्र बना हुआ है.

मानसून के दिनों में जानापाव की खूबसूरती कई गुना बढ़ जाती है. पहाड़ियां हरी चादर ओढ़ लेती हैं, बादल कभी घाटियों में उतर आते हैं तो कभी चोटियों को अपनी आगोश में समेट लेते हैं. हाल ही में शरद ठाकुर अपने दोस्तों की टीम के साथ जानापाव की यात्रा पर पहुंचे. उन्होंने बताया कि बारिश के मौसम में यहां का वातावरण अविस्मरणीय हो जाता है. ट्रेकिंग के दौरान हर मोड़ पर प्रकृति का नया रूप देखने को मिलता है. ठंडी हवाएं, बादलों के बीच से गुजरते रास्ते और दूर-दूर तक फैली हरियाली मन को नई ऊर्जा से भर देती है.

शरद ठाकुर ने कहा कि इंदौर के इतने करीब स्थित इस प्राकृतिक धरोहर को हर प्रकृति प्रेमी को कम से कम एक बार अवश्य देखना चाहिए. उनके अनुसार यह स्थान केवल धार्मिक आस्था का केंद्र ही नहीं, बल्कि परिवार, दोस्तों और फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए भी एक यादगार पर्यटन स्थल है. यहां बिताया गया हर पल जीवनभर की खूबसूरत याद बन जाता है.

एक नजर में — **21वीं सानंद नाट्य स्पर्धा में आर्टिस्ट कंबाइन ग्वालियर की पारिवारिक प्रस्तुति**

'माझी पसंत माझा निर्णय' : बदलते सामाजिक मूल्यों को रेखांकित करता संवेदनशील नाटक

नवभारत न्यूज

इंदौर. 21 वीं सानंद नाट्य स्पर्धा में गुरुवार को ग्वालियर की संस्था आर्टिस्ट कंबाइन ने तारिणी जयराम पुरंदरे लिखित और दिग्दर्शित मराठी नाटक माझी पसंत माझा निर्णय की रोचक और पारिवारिक प्रस्तुति दी.

यह नाटक आज के बदलते सामाजिक परिवेश में विवाह, पीढ़ियों के बीच वैचारिक टकराव और पारिवारिक रिश्तों की गरिमा को बेहद सहज और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है. यह नाटक केवल प्रेम विवाह और पारंपरिक विवाह के बीच के मतभेद तक सीमित नहीं रहता, बल्कि इस प्रश्न को भी उठाता है कि परिवार का वास्तविक आधार अधिकार नहीं, बल्कि विश्वास, संवाद और स्वीकार्यता है. माझी पसंत माझा निर्णय अंतत: यही संदेश देता है कि रिश्तों की मजबूती किसी एक की जीत या हार में नहीं, बल्कि परस्पर सम्मान, संवाद और स्वीकार्यता में निहित होती है.

कहानी..

कहानी एक मध्यमवर्गीय परिवार के इर्द-गिर्द घूमती है. माता-पिता अपने बेटे राहुल के लिए अपनी पसंद की संस्कारी बहू चाहते हैं, जबकि राहुल अपने जीवनसाथी का चुनाव स्वयं करता है. यही निर्णय

परिवार में भावनात्मक दूरी पैदा कर देता है. कथा का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ तब आता है, जब पेइंग गेस्ट सोनाली परिवार में प्रवेश करती है. उसका संवेदनशील और संतुलित दृष्टिकोण टूटते रिश्तों को जोड़ने का माध्यम बनता है. सोनाली का चरित्र यह संदेश देता है कि कई बार परिवार के भीतर संवाद की शुरुआत किसी तीसरे की निष्पक्ष समझ से भी हो सकती है. लेखिका तारिणी जयराम पुरंदरे ने अत्यंत सरल, स्वाभाविक और जीवन के निकट लगने वाला कथानक रचा है. संवादों में कृत्रिमता नहीं, बल्कि रोजमर्रा के पारिवारिक जीवन की सहजता दिखाई देती है. उन्होंने बिना किसी उपदेशात्मक शैली के यह स्थापित किया है कि समय के साथ सामाजिक सोच बदलती है और परिवारों को भी संवेदनशीलता के साथ इन परिवर्तनों को स्वीकार करना चाहिए.

कलाकार ...

- आनंद दाणेकर, ऋत्विक मुजुमदार,
- सौ. तारिणी जयराम पुरंदरे,
- सौ. देवांगी पुरंदरे-लिमये, रवि आफळे,
- सौ. सुजाता वाकडे, मंगेश गोहदकर,
- कृतिका गेवराईकर, प्रमोद गजेन्द्रगडकर, जयप्रकाश गोरे.

सुहानी और डोनाल्य ने राज्य स्तरीय नेटबॉल प्रतियोगिताओं में इंदौर को दिलाया प्रथम स्थान

नवभारत न्यूज

इंदौर . विद्यासागर महाविद्यालय के बीपीएड द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों ने राज्य स्तरीय नेटबॉल प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर इंदौर जिले का नाम रोशन किया है. सुहानी चौहान का चयन चौथी सीनियर राज्य स्तरीय नेटबॉल प्रतियोगिता (महिला) और डोनाल्ड नैसी का चयन थर्ड सीनियर राज्य स्तरीय मिक्स नेटबॉल प्रतियोगिता (पुरुष) के लिए हुआ था. दोनों प्रतियोगिताएं इंदौर में आयोजित की गई. प्रतियोगिता में सुहानी चौहान ने इंदौर जिला महिला नेटबॉल टीम तथा डोनाल्ड नैसी ने इंदौर जिला मिक्स नेटबॉल टीम का प्रतिनिधित्व करते हुए शानदार खेल का प्रदर्शन किया और अपनी-अपनी टीमों को प्रथम स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. इस उपलब्धि पर विद्यासागर महाविद्यालय के प्रबंधक प्रतीश राजू व कॉलेज प्राचार्य डॉ. सुरेन्द्र कुमार तिवारी ने शुभकामनाएँ दीं.